सत्ता की राजनीति और जयप्रकाश नारायण

डॉ. रामाशीष शर्मा*

आधुनिक भारत के निर्माण में जयप्रकाश नारायण का अतिमहत्वपूर्ण योगदान रहा है जय प्रकाश नारायण मार्क्सवाद से प्रभावित होने के बावजूद गाँधी वादी विचारधारा के थे बीसवीं शताब्दी के महत्वपूर्ण राजनेताओं में लोकनायक जयप्रकाश नारायण का नाम बड़े ही आदर और सम्मान के साथ लिया जाता था।वे राजनीति में रहकर भी सत्ता के लोलुप कभी नहीं रहे। जयप्रकाश नारायण के राजनीतिक दर्शन को दो वर्गों में विभाजित करके देखा जा सकता है। क्रांति के नियंता के रूप में और क्रांति के रक्षक के रूप में। आजादी के पूर्व उनकी भूमिका क्रांति के नियन्ता के रूप में है। ब्रिटिश सत्ता को भारत से निकाल बाहर करने के लिए उन्होंने जो कार्य किया है उसे आने वाली पीढ़ी हमेशा आदर के साथ याद करेगी। जब भी किसी क्रांतिकारी की जेल यातना के बारे में चर्चा होगी तो उसमें सर्वप्रथम जयप्रकाश नारायण की चर्चा होगी। १९४२ के महानायक के रूप में जयप्रकाश नारायण देश के सामने आये। उस समय भारत के नवयुवकों पर कुछ ही नेताओं का विशेष प्रभाव था जिसमें जयप्रकाश नारायण सबसे ऊपर है। स्वतंत्र भारत में जनता का सबसे ज्यादा प्यार और सम्मान जिन दो नेताओं को मिला था वे है पं. जवाहरलाल नेहरू और जयप्रकाश नारायण। दोनों में अंतर यह रहा कि जहाँ नेहरू हमेशा राज सत्ता के शिखर पर रहे, जयप्रकाश नारायण हमेशा अपने को राज सत्ता से अलग रहकर लोकसत्ता को मजबूत करने में लगे रहे।

आधुनिक भारत के निर्माण में जयप्रकाश नारायण की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।उन्होंने अपने मूल्यों और आदर्शों के साथ कभी समझौता नहीं किया जिन मूल्यों और आदर्शों की प्राप्ति के लिए उन्होंने ब्रिटिश सत्ता से संघर्ष करके देश को आजाद कराया था उन मूल्यों और आदर्शों को सुरक्षित रखने का दायित्व गाँधी जी की मृत्यु के बाद मुख्य रूप से जयप्रकाश नारायण के कंधे पर आई और क्रांति के रक्षक के रूप में जयप्रकाश नारायण ने अपने दायित्वों का निर्वहन जिस कुशलता पूर्वक किया है वह अपने आप में काफी महत्वपूर्ण है।

जयप्रकाश नारायण के अन्दर सत्ता के प्रति बिल्कुल ही लोभ नहीं था। अन्य नेताओं की तरह यदि वह चाहते तो सत्ता में उच्च पद प्राप्त कर सकते थे। लेकिन जयप्रकाश नारायण तो एक कर्मयोगी थे जो निःस्वार्थ भाव से समाजसेवा का काम करना चाहते थे। वे विवेकानन्द की तरह सच्चे अर्थ में समाजसेवक थे।

मंत्रिमंडल में शामिल होने का प्रस्तावः-

सन् १९५२ में हुए आम चुनाव में सोशलिस्ट पार्टी की असफलता को लेकर महत्वपूर्ण

*असिस्टेन्ट प्रोफेसर, एच.ओ. डी. राजनीत शास्त्र SSP आदर्श संस्कृत कॉलेज हुसलागंज गया बिहार)

नेता काफी परेशान थे और निराश भी। जयप्रकाश नारायण निराश तो नहीं हुए, परन्तु उन्हें ऐसा लगा कि पार्टी की विफलता का मुख्य कारण यह था कि कांग्रेस के विरोधी मतों का विभाजन हो गया। उन्होंने महसूस किया कि समान विचार वाले कांग्रेस के विरोधी दलों के बीच सहयोग होना चाहिए। चुनाव परिणाम का विश्लेषण करने के लिए पंचमढी (मध्यप्रदेश) में पार्टी का विशेष अधिवेशन बुलाया गया। सम्मेलन के महामंत्री के रूप में जयप्रकाश नारायण ने अपना विचार रखा कि विरोधी दलों में एकता होनी चाहिए। डॉ. राममनोहर लोहिया ने भी इस विचार का समर्थन किया। इस चुनावी परिणती के बाद फरवरी, १९५३ में पंडित जवाहर लाल नेहरू ने जयप्रकाश नारायण को बातचीत के लिए आमंत्रित किया ताकि कांग्रेस और प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के बीच सहयोग की सम्भावना तलाशी जा सके। नेहरू जी ने उन्हें अपने मंत्रिमण्डल में शामिल होने का निमंत्रण दिया। जिसमें अपने समाजवादी साथियों के साथ केन्द्रिय मंत्रिमण्डल में शामिल होकर देश की सेवा करें। पर जयप्रकाश नारायण इस बात को ठुकरा दिए और ४ मार्च १९५३ को नेहरू को पत्र लिखकर अपना दृष्टिकोण स्पष्ट कर दिया कि सहयोग क्यों और किन शर्तों पर होना सम्भव है। इस तरह जयप्रकाश नारायण ने अपना पहला मौका साहस के साथ ठुकरा दिया। यह है जयप्रकाश नारायण की अदम्य शक्ति।

सन् १९६२ में भारत पर चीन के आक्रमण के समय नेहरू सरकार के प्रति पूरे देश एवं मंत्री मण्डल में काफी असंतोश था। यदि जयप्रकाश नारायण चाहते तो इसका फायदा बड़े ही आसानी से उठा सकते थ किजु उन्होंने ऐसा नहीं किया। तत्कालीन राष्ट्रपति राधाकृष्णन् ने जयप्रकाश नारायण से कहा ''जे.पी. मेक रेडी टू टेक ओवर''। कुछ सांसदों ने भी इस दिशा में पहल की। नेतृत्व परिवर्तन का समर्थन करने वालों की बैठक एक समाजवादी साथी पुरूषोत्तम विक्रमदास के घर हुई और उनसे नेतृत्व स्वीकार करने का आग्रह किया गया। किन्तु जयप्रकाश नारायण ने इसे न केवल ठुकरा दिया बल्कि पं. जवाहरलाल नेहरू से मिलकर उन्हें अपना समर्थन दिया। आज के नेता पद की लोलुपता के लिए क्या नहीं कर रहे हैं। जिस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जनता अपना प्रतिनिधि विधानमण्डल व संसद में भेजती है वहाँ जनता के प्रति सच्ची श्रद्धा की तिलांजली देकर नेता अपना चरित्र परिवर्तन कर पद को पाने के लिए सबकुछ कर बैठते हैं। लेकिन जयप्रकाश नारायण एक ऐसे २०वीं शताब्दी में महामानव हुए जिन्होंने सत्ता के इर्दगिर्द रहते हुए भी पद पाने के लिए कुछ भी नहीं किया। जयप्रकाश नारायण चाहते तो प्रधानमंत्री से राष्ट्रपति तक बन सकते थे, परन्तु उन्होंने जितनी शांति सत्ता से दूर रहकर समाज सेवा करने में पाई उतनी सत्ता ग्रहण कर नहीं पाते।

१९६४ में पंडित जवाहर लाल नेहरू की मृत्यु के पश्चात् प्रधानमंत्री पद के लिए जयप्रकाश नारायण का नाम सुझाया था उनकी योग्यता को देखते हुए बहुत लोग चाहते थे कि वे प्रधानमंत्री बने। किन्तु जयप्रकाश नारायण की थोड़ी भी दिलचस्पी नहीं थी। लालबहादुर शास्त्री ने कहा कि यदि जयप्रकाश नारायण प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार होते हैं तो वे (शास्त्री) अपना नाम वापस ले लेगें। इसके बाद भी जयप्रकाश नारायण ने कोई दिलचस्पी नहीं दिखाते हुए कहा

कि एक बार सत्ता से दूर होने के बाद फिर इससे सटना नहीं है। जयप्रकाश नारायण ने कहा कि जो अनुभूति हमें सत्ता से अलग रहकर हो रही है वह सत्ता प्राप्त करने के बाद नहीं मिलेगी। जे.पी. की सोच में वह सच्चाई थी जिससे वे समाजवादी सपना को साकार कर सके। इनकी मृत्यु के बाद इनके ही मित्रों ने बिहार की राजनीति में समाजवादी समाज की स्थापना आजतक नहीं कर सके। जयप्रकाश नारायण के साथ रहकर जो आदर्श कायम किया था वह मृत्यु के बाद देखने को नहीं मिला।

सन् १९६७ में डॉ. राममनोहर लोहिया और मीनू मशानी ने उनका नाम राष्ट्रपति पद के लिए सुझाया था। उस समय यदि वे चाहते तो राश्ट्रपति भी बन सकते थे जयप्रकाश नारायण के नाम पर कई दलों और कांग्रेस के भी कुछ सदस्यों का समर्थन मिलने लगा था। लेकिन जयप्रकाश नारायण ने डॉ. जाकिर हुसैन को अपने समर्थन की घोषणा कर दिया। इन सबका मात्र एक कारण था लोक शक्ति में उनकी अटूट आस्था। जयप्रकाश नारायण यह मानते थे कि सत्ता से जितनी दूरी बना कर समाज की सेवा की जा सकती है उतनी सत्ता को प्राप्त कर नहीं की जा सकती। उस समय जबकि सत्ता में गिने चुने लोग ही पहुँच पाते थे जिनके हृदय में समाज की सेवा करने की चाह थी। आज जो समाज सेवक सत्ता को प्राप्त कर रहे हैं वे अपना पेट भरने में लगे हैं। ऐसे में जयप्रकाश नारायण की सोच २०वीं शताब्दी के उन नेताओं में से विचित्र थी जो आज सत्ता हासिल करने के लिए गरीबों को आगे खड़ा कर रोटी सेकनें में लगे हैं। जे. पी. का यहाँ राजनीति से दूर रहना अपने आप में एक मिशाल कायम करता है।

जयप्रकाश नारायण जनता की सेवा को ही सर्वोच्च मानते थे उन्होंने हमेशा ही राजनीत से दूर रहकर जनता की सेवा को सर्वोपरि समझा।

उनके हर काम तथा विचारों में सबसे ज्यादा जोर होता था जनता पर। लोकतंत्र में वे जनता को सर्वोपरी मानते थे। इसी भावना से उपजी थी सम्पूर्ण क्रांति की अवधारणा। उनका उद्देश्य था समाज की संरचना को राजसत्ता से दूर रहकर पूरी तरह बदलना, क्योंकि उनके विचार में व्यवस्था इतनी भ्रष्ट हो चुकी थी कि बिना पूरी व्यवस्था बदले नैतिक और समतामूलक समाज का निर्माण नहीं हो सकता था। जयप्रकाश नारायण सत्ता के इर्द-गिर्द रहकर भी कभी सत्ता के शिखर पर पहुँचने की सोच नहीं रखा। वे सत्ता से दूर रहकर समकालीन समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया। चाहे वह चम्बल घाटी के डकैतों की समस्या हो, मुजफ्फरपुर की समस्या हो, नागालैण्ड की समस्या हो, या बिहार में नक्सली समस्या का संकट हो या बांग्लादेश या तिब्बत की या विश्व में परमाणु युद्ध के बढ़ रहे खतरे की। जयप्रकाश नारायण एक साथ राजनीतिक, अन्तर्राष्ट्रीय सम्बंध, सहकारिता, शिक्षा, मानवाधिकार तथा अन्य ज्वलंत समस्याओं पर मनन करते थे। जयप्रकाश नारायण ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की तरह देश से कुछ मांगा नहीं सिर्फ दिया है। इसलिए देश उनके नैतिक अधिकार को मानता था। यदि जे.पी. सत्ता की लोलुपता में रह जाते तो देश में विभिन्न तरह की सामाजिक समस्याओं का समाधान शायद इतनी आसानी से नहीं हो पाती। ऐसे में जयप्रकाश नारायण के सत्ता से दूर रहने का अदम्य साहस व बलिदान

को आनेवाली पीढ़ी हमेशा आदर के साथ याद करती रहेगी। जयप्रकाश नारायण को जनता ने इसी वजह से उन्हें लोकनायक कहा। इस संबंध में जयप्रकाश नारायण खुद कहते थे कि मैं लोकनायक नहीं हूँ, बल्कि लोकसेवक हूँ। हमें जनता की सेवा करनी है इसी में हमारा हित निहित है। जब मैं समाज का कल्याण करूँगा तब मेरा भी स्वयं कल्याण हो जाएगा। जयप्रकाश नारायण के उक्त विचारों एवं उनके कर्म में थोड़ा भी अन्तर नहीं था।

संदर्भ ग्रन्थ सूची :

१. डा.सी.पी.सिंहः ''आज जब हम जे.पी. को याद करते है'' आलेख, प्रभात खबर पटना ११ अक्टूबर २००७, पृ. सं.-८

२. मसानी मीनूः हू वाज दिस मैन

३. जयप्रकाश नारायणः मेरी विचार यात्रा, पृ. सं.-२२, २३

४. डॉ. सच्चिदानन्द सिन्हाः जे.पी. और भूमिसुधार,

५. सुधांशु रंजन : जयप्रकाश, पृ. सं.-१,२,३,२८,७४,६३

६. जयप्रकाश नारायणः समाजवाद, सर्वोदय और लोकतंत्र, पृ.सं.-५ प्रतियोगिता किरण, पटना दिसम्बर, २००७

******